भूगोल

सातवीं कक्षा

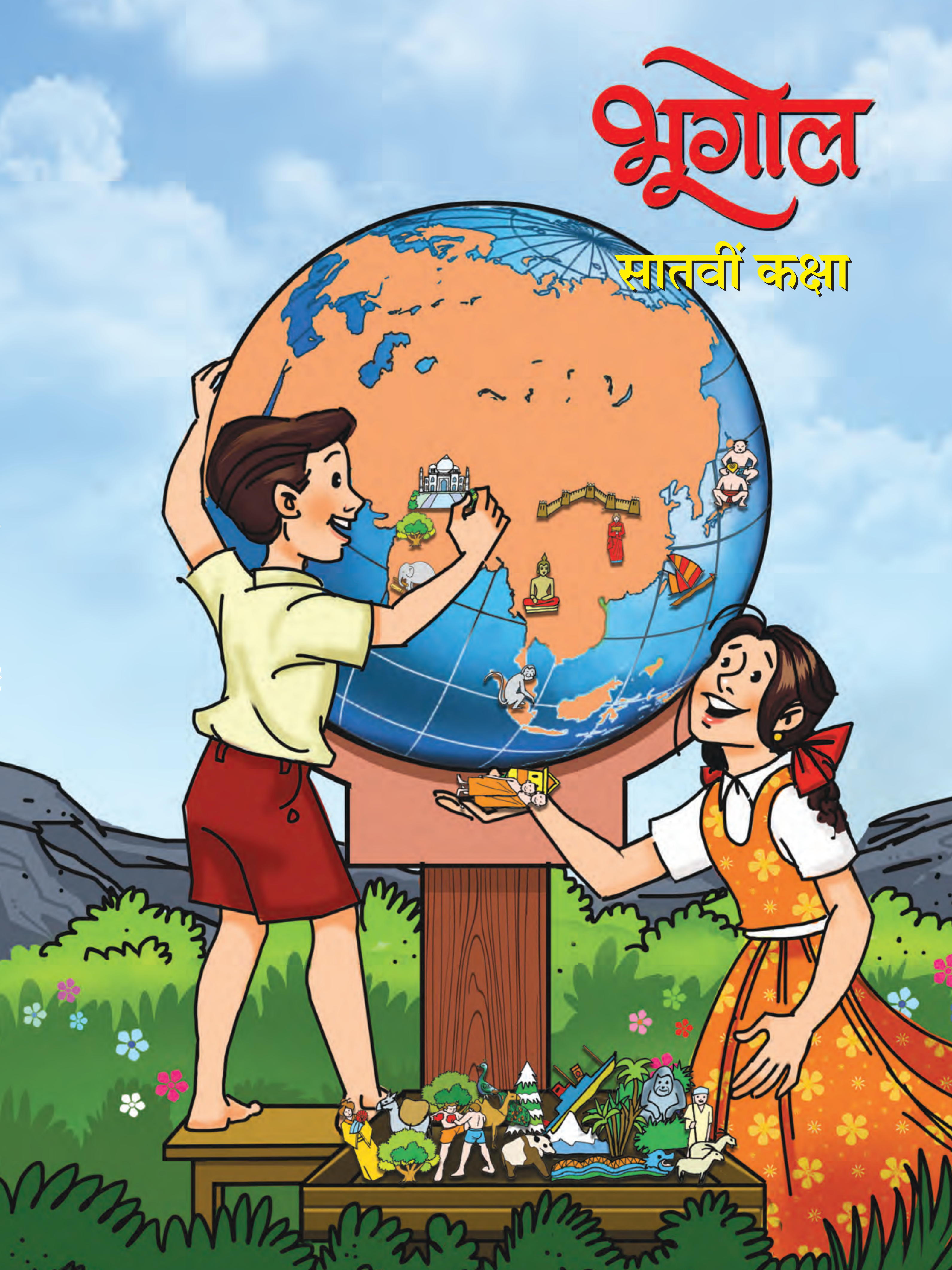

भारत का संविधान

भाग 4 क

मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य– भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्र ध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करें;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखें;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध है;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले;

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करे ।

शासन निर्णय क्रमांक : अभ्यास-२११६/(प्र.क्र.४३/१६) एसडी-४ दिनांक २५.४.२०१६ के अनुसार समन्वय समिति का गठन किया गया । दि. ३.३.२०१७ को हुई इस समिति की बैठक में यह पाठ्यपुस्तक निर्धारित करने हेतु मान्यता प्रदान की गई ।

भूगोल

सातवीं कक्षा

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

IV1HQR

आपके स्मार्टफोन में 'DIKSHA App' द्वारा, पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर Q.R.Code के माध्यम से डिजिटल पाठ्यपुस्तक एवं प्रत्येक पाठ में अंतर्निहित Q.R.Code में अध्ययन अध्यापन के लिए पाठ से संबंधित उपयुक्त दृक-श्राव्य सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी ।

प्रथमावृत्ति : २०१७
चौथा पुनर्मुद्रण : २०२१

© महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे ४११००४

इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है। इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

भूगोल विषय समिति :

डॉ. एन. जे. पवार, अध्यक्ष
डॉ. सुरेश जोग, सदस्य
डॉ. रजनी माणिकराव देशमुख, सदस्य
श्री सचिन परशुराम आहेर, सदस्य
श्री गौरीशंकर दत्तात्रय खोबरे, सदस्य
श्री र. ज. जाधव, सदस्य-सचिव

भूगोल अभ्यासगट :

डॉ. हेमंत मंगेशराव पेडणेकर
डॉ. कल्पना प्रभाकरराव देशमुख
डॉ. सुरेश गेणूराव साळवे
डॉ. हणमंत लक्ष्मण नारायणकर
डॉ. प्रद्युम्न शशिकांत जोशी
श्री संजय श्रीराम पैठणे
श्री श्रीराम रघुनाथ वैजापूरकर
श्री पुंडलिक दत्तात्रय नलावडे
श्री अतुल दीनानाथ कुलकर्णी
श्री बाबुराव श्रीपती पोवार
डॉ. शेख हुसेन हमीद
श्री ओमप्रकाश रतन थेटे
श्री पद्माकर प्रल्हादराव कुलकर्णी
श्री शांताराम नथ्थू पाटील

चित्रकार : श्री भटू रामदास बागले, श्री निलेश जाधव
मुखपृष्ठ एवं सजावट : श्री भटू रामदास बागले
मानचित्रकार : श्री रविकिरण जाधव
अक्षरांकन : मुद्रा विभाग, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
भाषांतरकार : प्रा. शशि मुरलीधर निघोजकर
समीक्षक : श्री हरीश कुमार दौलतराम खत्री
भाषांतर संयोजन : डॉ. अलका पोतदार
विशेषाधिकारी हिंदी
संयोजन सहायक : सौ. संध्या वि. उपासनी
सहायक विशेषाधिकारी हिंदी
कागज : ७० जी.एस.एम क्रिमवोव
मुद्रणादेश : एन्/पिबी/२०२१-२२/(३७,०००)
मुद्रक : मे. भवानी इंडस्ट्रीज, कोल्हापूर

निर्मिति :

श्री सच्चितानंद आफळे, मुख्य निर्मिति अधिकारी
श्री विनोद गावडे, निर्मिति अधिकारी
श्रीमती मिताली शितप, सहायक निर्मिति अधिकारी

प्रकाशक :

श्री विवेक उत्तम गोसावी,
नियंत्रक
पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ,
प्रभादेवी, मुंबई-२५

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता

और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

राष्ट्रगीत

जनगणमन – अधिनायक जय हे
भारत – भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत – भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई–बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता–पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है ।

प्रस्तावना

विद्‌यार्थी मित्रो...

सातवीं कक्षा में तुम सबका स्वागत है। तुमने भूगोल विषय को तीसरी कक्षा से पाँचवीं कक्षा तक 'परिसर अध्ययन पाठ्‌यपुस्तक और छठी कक्षा की भूगोल पाठ्‌यपुस्तक के माध्यम से पढ़ा है। सातवीं कक्षा की भूगोल पाठ्‌यपुस्तक को तुम्हारे हाथों में देते हुए आनंद हो रहा है।

तुम्हारे आस-पास बहुत-सी घटनाएँ घटित होती रहती हैं। जिस प्रकृति में हम रहते हैं, समाए हुए हैं; वह प्रकृति हमसे धूप, वर्षा और शीत के रूप में मिलती रहती है। शरीर पर गुदगुदी करने वाला हवा का झोंका तुम्हें आह्‌लाद का अनुभव करा देता है। ऐसी प्रकृति, ऐसी प्राकृतिक घटनाओं आदि का स्पष्टीकरण भूगोल विषय का अध्ययन करने से प्राप्त होता है। भूगोल तुम्हें निरंतर प्रकृति की ओर ले जाने का प्रयास करता है। इस विषय में सजीवों की प्रकृति के साथ तथा एक-दूसरे के साथ होने वाली अंतरक्रियाओं का भी अध्ययन करना पड़ता है ।

इस विषय के माध्यम से तुम पृथ्वी के संदर्भ में कई मौलिक अवधारणाओं का अध्ययन करने वाले हो। तुम्हारे प्रतिदिन के जीवन से संबंधित मानवीय कार्य-व्यापारों के अनेक अंगों को तुम्हें इस विषय द्‌वारा समझना है। यदि ये सभी कार्य-व्यापार व्यवस्थित रूप से समझ में आते हैं तो इन सभी बातों का तुम्हें भविष्य में निश्चित रूप से उपयोग होगा। इस विषय द्‌वारा हम विभिन्न मानवीय समूहों की आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अंतरक्रियाओं का भी अध्ययन करते हैं।

इस विषय का अध्ययन करने के लिए निरीक्षण, आकलन, विश्लेषण जैसे कौशल बहुत महत्त्व रखते हैं। इन कौशलों का सदैव उपयोग करो और उनका संवर्धन करो। मानचित्र, आलेख, चित्राकृति, जानकारी का आदान-प्रदान, तालिकाएँ आदि इस विषय का अध्ययन करने के साधन हैं। उन्हें बार-बार उपयोग में लाने का अभ्यास करो।

तुम पाठ्‌यपुस्तक में दी गईं सभी आसान और सरल कृतियाँ अवश्य करो। इस पाठ्‌यपुस्तक का अध्ययन करते समय तुम्हें इसके पूर्व की पाठ्‌यपुस्तकों में पढ़े हुए घटक निश्चित रूप से उपयोगी सिद्‌ध होंगे। बस! उन्हें भूलो मत।

सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ !

(डॉ. सुनिल मगर)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्‌यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

पुणे
दिनांक : २८/०३/२०१७ (गुढी पाडवा)

भूगोल अध्ययन निष्पत्ति : सातवीं कक्षा

सुझाई गई शिक्षा प्रक्रिया	अध्ययन निष्पत्ति
विद्यार्थियों को जोड़ी में/गुट में/ व्यक्तिगत रूप में अध्ययन का मौका देना और उन्हें निम्न बातों के लिए प्रेरित करना ।	**विद्यार्थी**
• अंतरीक्षीय घटनाएँ समझने के लिए अभिभावक/शिक्षकों के मार्गदर्शन में तारे, ग्रह, उपग्रह(चंद्र), ग्रहणों का निरीक्षण करना। • ग्रहणसंबंधी अंधविश्वासों के बारे में विश्लेषणात्मक चर्चा करना। • सूर्य, चंद्र, पृथ्वी की हलचलें समझ लेने के लिए आकृतियाँ, प्रतिकृतियाँ(माडेल्स्) तथा ऋतुनिर्मिति के साधनों का प्रयोग करना।	07.73G.01 पृथ्वी का झुका हुआ अक्ष, परिभ्रमण तथा परिक्रमण के कारण दिन-रात तथा ऋतुनिर्मिति होती है, इसे स्पष्ट करते हैं। 07.73G.02 पृथ्वी की विविध ऋतुओं का सजीवों पर होने वाला परिणाम बताते हैं। 07.73G.03 पृथ्वी पर होने वाले ग्रहण अंतरीक्षीय घटना है, इसे पहचानते हैं। 07.73G.04 ग्रहणसंबंधी अंधविश्वासों का विश्लेषणात्मक परीक्षण करते हैं।
• मृदा निर्मिति संबंधी प्राकृतिक घटक तथा उसके कारण समझ लेना। • आसपास के परिसर/प्रदेश की मृदा के नमूने संकलित करके मृदा प्रकार पहचानकर वर्गीकरण करना।	07.73G.05 प्राकृतिक संसाधन मृदा के संवर्धन के लिए संवेदनशीलता दर्शाते हैं। 07.73G.06 मानचित्र के आधार पर महाराष्ट्र की मृदाओं का प्रकार बताते हैं।
• तापमान पेटियों का वायुदाब पेटियों के साथ होने वाला सहसंबंध समझ लेना। • मानचित्र और भौगोलिक साधनों का प्रयोग करके प्रदेश वायुदाब संबंधी चर्चा करना।	07.73G.07 वायुदाब के परिणाम स्पष्ट करते हैं। 07.73G.08 मानचित्र की समदाब रेखाओं से किसी क्षेत्र का वायुदाब स्पष्ट करते हैं।
• पवन की दिशा में होने वाला परिवर्तन समझ लेना। • पवन के स्थानीय तथा जागतिक हवाओं के प्रकार स्पष्ट करना। • तकनीकी का प्रयोग करके तूफान संबंधी जानकारी संकलित करना। • समुद्री जल की लहरों पर होने वाले परिणामों को समझने के लिए विविध कृति, प्रतिकृतियों का प्रयोग करना।	07.73G.09 हवा (पवन) निर्मिति के कारण बताते हैं। 07.73G.10 हवा (पवन) निर्मिति के प्रकार बताते हैं। 07.73G.11 हवा (पवन) निर्मिति परिणामों को स्पष्ट करते हैं। 07.73G.12 सूर्य, चंद्र, पृथ्वी का समुद्री हलचलों पर होने वालो परिणाम बताते हैं।
• किसी प्रदेश के कृषि पूरक व्यवसायों में समय के अनुसार किस प्रकार परिवर्तन होता गया इसे समझ लेना। • कृषि पर्यटन तथा प्राकृतिक पद्धति से उगाए उत्पादन का महत्व बताना। • आधुनिक कृषि तथा विपणन संबंधी जानकारी संकलित करना।	07.73G.13 कृषिपूरक विभिन्न व्यवसाय बताते हैं। 07.73G.14 कृषि के विविध प्रकार उदाहरणसहित स्पष्ट करते हैं। 07.73G.15 कृषि के लिए विक्रय व्यवस्था का महत्व बताते हैं। 07.73G.16 मानवी जीवन तथा देश की अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्व बताते हैं।
• प्राकृतिक रचना के अनुसार होने वाला सजीवों का अनुकूलन समझ लेना। • संदर्भस्त्रोत तथा मानचित्रों का प्रयोग करते हुए प्राकृतिक प्रदेशों के संदर्भ में चर्चा करते हैं। • किसी विशेष क्षेत्र (प्रदेश) के बारे में प्रश्न पूछते हैं तथा उस संदर्भ में खोज करना।	07.73G.17 सजीवों पर क्षेत्र के प्राकृतिक घटकों का होने वाले परिणाम बताते हैं। 07.73G.18 संसार के मानचित्र प्रारूप में प्राकृतिक प्रदेश दर्शाते हैं।
• मानवीय बस्तियों का वितरण तथा आकृतिबंध ध्यान में लेना। • किसी प्रदेश की मानवी तथा प्राकृतिक रचनाओं में पारस्परिक संबंधों का अनुकूलन तथा प्रतिकूल(विपरित) परिणामों का परीक्षण करने आना।	07.73G.19 बस्तियों की निर्मिति में मानव ने प्राकृतिक घटकों का किस प्रकार उपयोग किया यह बताते हैं। 07.73G.20 मानवी बस्ती प्रकारों का आकृतिबंध पहचानता है।
• मानचित्र तथा अन्य भौगोलिक साधनों का प्रयोग करते हुए किसी प्रदेश के संदर्भ में भूरूप पहचानना। • मानचित्र की सहायता से भौगोलिक घटकों के संदर्भ में अनुमान निकालना।	07.73G.21 समोच्च रेखा बनाते हैं। 07.73G.22 सम्मोच्य रेखा मानचित्र का वाचन करते हैं। 07.73G.23 समोच्चता दर्शक मानचित्रों का उपयोग करते हैं।

– शिक्षकों के लिए –

- ✓ सबसे पहले स्वयं पाठ्यपुस्तक को समझें।
- ✓ प्रत्येक पाठ में दी गई कृति के लिए ध्यानपूर्वक और स्वतंत्र नियोजन करें। नियोजन के अभाव में पाठ का अध्यापन करना उचित नहीं होगा।
- ✓ अध्ययन-अध्यापन में 'अंतरक्रिया' 'प्रक्रिया' 'सभी विद्यार्थियों का प्रतिभाग' तथा 'आपका सक्रिय मार्गदर्शन' जैसे घटक अति आवश्यक हैं।
- ✓ विषय का उचित पद्धति से आकलन होने हेतु विद्यालय में उपलब्ध भौगोलिक साधनों का आवश्यकतानुसार उपयोग करना समीचीन होगा। इस दृष्टि से विद्यालय में उपलब्ध पृथ्वी भूगोलक, संसार, भारत, राज्यों के मानचित्र, मानचित्रावली, तापमापक का उपयोग करना अनिवार्य है; इसे ध्यान में रखें।
- ✓ यद्यपि पाठों की संख्या सीमित रखी गई है फिर भी प्रत्येक पाठ के लिए कितने कालांश लगेंगे; इसका विचार किया गया है। अवधारणाएँ अमूर्त होती हैं। अतः वे दुर्बोधपूर्ण और क्लिष्ट होती हैं। इसीलिए अनुक्रमणिका में कालाशों का जिस प्रकार उल्लेख किया गया है; उसका अनुसरण करें। पाठ को संक्षेप में निपटाने का प्रयास न करें। इससे विद्यार्थियों को भूगोल विषय लदा हुआ बौद्धिक बोझ नहीं लगेगा। उल्टे; विषय को आत्मसात करने में सहायता प्राप्त होगी।
- ✓ अन्य समाज विज्ञानों की भाँति भूगोल की अवधारणाएँ सहजता से समझ में नहीं आतीं। भूगोल की अधिकांश अवधारणाएँ वैज्ञानिक निकषों और अमूर्त घटकों पर निर्भर करती हैं। इन निकषों/घटकों को समूह कार्य में और एक-दूसरे के सहयोग से सीखने के लिए प्रोत्साहन दें। इसके लिए कक्षा की संरचना में परिवर्तन करें। कक्षा का ढाँचा ऐसा बनाएँ कि विद्यार्थियों को पढ़ने के लिए अधिकाधिक अवसर मिलेगा।
- ✓ पाठ में दी गईं विभिन्न चौखटें और उनके आनुषंगिक रूप से सूचना देनेवाला 'ग्लोबी' चरित्र विद्यार्थियों में प्रिय होगा; यह देखें।
- ✗ प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक रचनात्मक पद्धति एवं कृतियुक्त अध्यापन के लिए तैयार की गई है। प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक के पाठ कक्षा में केवल पढ़कर न पढ़ाएँ।
- ✓ संबोधों की क्रमिकता को ध्यान में लें तो पाठों को अनुक्रमणिका के अनुसार पढ़ाना विषय के सुयोग्य ज्ञान निर्माण की दृष्टि से उचित होगा।
- ✓ 'क्या तुम जानते हो?' इस चौखट पर मूल्यांकन हेतु विचार न करें।
- ✓ पाठ्यपुस्तक के अंत में परिशिष्ट दिए गए हैं। इस परिशिष्ट में पाठों में आए हुए भौगोलिक शब्दों/अवधारणाओं की विस्तृत जानकारी दी गई है। परिशिष्ट में समाविष्ट शब्द वर्णक्रमानुसार हैं। इस परिशिष्ट में दिए गए शब्द पाठों में नीली चौखट द्वारा दर्शाए गए हैं। जैसे 'कालगणना' (पाठ क्र. १, पृष्ठ क्र. १)
- ✓ परिशिष्ट के अंत में संदर्भ के लिए संकेत स्थल दिए गए हैं। साथ ही; संदर्भ के लिए उपयोग में लाई गई सामग्री की जानकारी दी गई है। अपेक्षा यह की जाती है कि आप स्वयं और विद्यार्थी इस संदर्भ का उपयोग करेंगे। इस संदर्भ सामग्री के आधार पर आपको पाठ्यपुस्तक के दायरे के बाहर जाने में निश्चित रूप से सहायता प्राप्त होगी। इस विषय को गहराई से समझने के लिए विषय का अतिरिक्त पठन/वाचन सदैव ही उपयोगी सिद्ध होता है; यह ध्यान में रखें।
- ✓ मूल्यांकन के लिए कृतिप्रधान, मुक्तोत्तरी, बहुवैकल्पिक, विचारप्रवर्तक प्रश्नों का उपयोग करें। इसके कुछ नमूने पाठों के अंत में स्वाध्यायों में दिए गए हैं।
- ✓ पाठ्यपुस्तक में दिए गए 'क्यू आर कोड' का उपयोग करें।

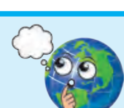

– विद्यार्थियों के लिए –

ग्लोबी का उपयोग : इस पाठ्यपुस्तक में पृथ्वी गोलक का उपयोग एक चरित्र के रूप में किया गया है। उसका नाम है-'ग्लोबी'। यह ग्लोबी चरित्र प्रत्येक पाठ में तुम्हारे साथ रहेगा। पाठ में आई हुईं विभिन्न अपेक्षित बातों/घटकों के लिए यह ग्लोबी तुम्हारी सहायता करेगा। प्रत्येक स्थान पर यह तुम्हें कुछ कार्य सुझाएगा और तुम उसे करने का प्रयास करो।

अनुक्रमणिका

क्र.	पाठ का नाम	क्षेत्र	पृष्ठ क्रमांक	अपेक्षित कालांश
१.	ऋतुनिर्मिति (विभाग-१)	सामान्य भूगोल	१	०३
२.	सूर्य, चंद्रमा और पृथ्वी	सामान्य भूगोल	३	०९
३.	ज्वार-भाटा	प्राकृतिक भूगोल	९	१०
४.	वायुदाब	प्राकृतिक भूगोल	१६	०९
५.	हवाएँ	प्राकृतिक भूगोल	२१	०९
६.	प्राकृतिक प्रदेश	प्राकृतिक भूगोल	३०	१३
७.	मृदा	प्राकृतिक भूगोल	३९	०९
८.	ऋतुनिर्मिति (भाग-२)	सामान्य भूगोल	४६	१०
९.	कृषि	मानवीय भूगोल	५२	१२
१०.	मानवीय बस्ती	मानवीय भूगोल	६२	०७
११.	समोच्च रेखा, मानचित्र और भूरूप	प्रत्यक्षीकरण भूगोल	६९	०७
	परिशिष्टः विशिष्ट भौगोलिक शब्दों के पारिभाषिक अर्थ		७५	०

S.O.I. Note : The following foot notes are applicable : (1) © Government of India, Copyright : 2017. (2) The responsibility for the correctness of internal details rests with the publisher. (3) The territorial waters of India extend into the sea to a distance of twelve nautical miles measured from the appropriate base line. (4) The administrative headquarters of Chandigarh, Haryana and Punjab are at Chandigarh. (5) The interstate boundaries amongst Arunachal Pradesh, Assam and Meghalaya shown on this map are as interpreted from the "North-Eastern Areas (Reorganisation) Act. 1971," but have yet to be verified. (6) The external boundaries and coastlines of India agree with the Record/Master Copy certified by Survey of India. (7) The state boundaries between Uttarakhand & Uttar Pradesh, Bihar & Jharkhand and Chattisgarh & Madhya Pradesh have not been verified by the Governments concerned. (8) The spellings of names in this map, have been taken from various sources.

DISCLAIMER Note : All attempts have been made to contact copy righters (©) but we have not heard from them. We will be pleased to acknowledge the copy right holder (s) in our next edition if we learn from them.

मुखपृष्ठ : भूगोलक पर विभिन्न प्रादेशिक प्रदेशों की विशिष्ट बिंदुओं को दर्शाते लड़की और लड़का ।
मलपृष्ठ : १) गेट वे ऑफ इंडिया, मुंबई २) मसाई और जुलू जनजाति के लोग और उनके मकान ३) हंपी, कर्नाटक ४) टुंड्रा प्रदेश में उपयोग में लाया जाने वाला वाहन- स्लेज गाड़ी । ५) मंगोलियन जनजाति का शिकारी ६) दक्षिण एशिया की प्रमुख फसल - चावल की रोपाई करते।